‘हिन्दी लेखिकाओं की आत्मकथाएँ : एक अनुशीलन’

(२००० से २०१५ तक)

भूमिका :

हिन्दी आत्मकथा साहित्य में लेखिकाएँ थोडी देरी से आई है । पर जब से वो आयी तब से लेकर अबतक लगातार लेखिकाओं की एक से बढ़कर एक आत्मकथा आयी है । बढ़ी ही प्रसिद्ध और साहसिक आत्मकथा लेखिकाओं द्‌वारा लिखी जा चुकी है । लेखिकाओं के आत्मकथा की यह एक विशेष बात है कि, वह खुलकर अपना जीवन, संघर्ष, सुख-दुःख, बता रही है । मन में कोई भी न्युनगंड न रखते हुए । कहाँ जाता है कि, स्त्री अपना जीवन, अपनी बीती बाते उजागर करने से डरती है, क्योंकि उसे भय होता है समाज, परिवार, अपने पति का । पर अब यह संकल्पना बदल गयी है । वह जैसा रहा वैसा जीवन स्पष्ट रुप से अपनी आत्मकथा में बता रही है । जिस वजह से हिन्दी आत्मकथा साहित्य में लेखिकाओं की आत्मकथा ने अपनी एक अलग जगह बनायी है । निश्चित ही आनेवाले समय में भी लेखिकाओं द्‌वारा इस विधा में काम होगा । २००० से २०१५ तक की आत्मकथाओं का अपना-अपना अलग महत्त्व है । इन आत्मकथाओं की सभी लेखिका प्रसिद्ध और श्रेष्ठ लेखिकाएँ है । इसकारण भी इस १०-१५ साल में आनेवाली आत्मकथा पर संशोधन करना भी आवश्यक है । जिससे लेखिकाओं की आत्मकथा का अध्ययन होगा ।

विषयचयन की प्रेरणा :

अनुसंधान के लिए विषय चयन करते समय मेरा आत्मकथा साहित्य की ओर इसलिये ज्यादा लगाव रहा है कि, जब भी मैं किसी लेखक, लेखिका, कवि या साहित्यकार की रचनाओं को पढ़ती हूँ । तब मेरे मन में प्रश्न उपस्थित होते है । जिसवजह से मेरे मन में जिज्ञासा उत्पन्न होती है । उन लेखक लेखिका के

जीवन के बारे में विस्तार से जानने की। इसवजह से सहज रुप से उनके जीवन को जानने के लिए मैं आत्मकथा साहित्य की ओर आकर्षित होती हूँ। इससे यह हुआ कि, यह विधा मेरी पसंदीदा विधा बन गयी है। इस विधा का अध्ययन विस्तार से करने की इच्छा हुई। यह बातें मैंने शोधनिर्देशक से की। जब हम दोनों की चर्चा इसपर हुई। तो यह निष्कर्ष निकला कि आत्मकथा साहित्य में लेखिकाओं की आत्मकथा इस पर काम किया जाएगा। तब हमनें लेखिकाओं की आत्मकथा साहित्य देखा और यह तय किया कि, २००० से २०१५ तक का काल अनुसंधान के लिए योग्य रहेगा। क्योंकि इसपर शोधकार्य नहीं हुआ है।

विषय का महत्व :

आत्मकथा साहित्य लेखक के बीते हुए जीवन का सच होता है। इसतरह लेखक हो या लेखिका, दोनों को आत्मकथा लिखनी हो तो अपने बीते हुए जीवन के राज खोलने पड़ते है। पर लेखिकाओं का लेखन इस विधा में थोडी देरी से हुआ। क्योंकि मुझे लगता लेखिका अपना बिता जीवन खोलने को तैयार नही थी। अब २१ वी शती की लेखिका बोल्ड लेखन कर रही है। वह खुलकर लिख रही है इसकारण उनमें हिम्मत आ गयी है कि, वह अपने जीवन संघर्ष के बारे में कुछ लिखे। इसवजह से हो सकता लेखिकाओं द्वारा आत्मकथा लेखन हो रहा है। इसीलिये २१ शदी के लेखिकाओं द्वारा लिखी आत्मकथा का अपना एक अलग महत्त्व है। यह विषय लेखिकाओं द्वारा लिखी आत्मकथा का अध्ययन करेगा। जिससे लेखिकाओं के संबंध में जो बाते आजतक सामने नहीं आयी वो आ जायेंगी।

अनुसंधान का उद्देश्य :

बिना उद्देश्य के कोई भी कार्य होता नहीं है । इसीतरह इस अनुसंधान का मुख्य उद्देश्य यह है कि, २००० से २०१५ तक की लेखिकाओं की आत्मकथा का अध्ययन करना । इसके अलावा इस अनुसंधान के यह भी उद्देश्य है -

- हिन्दी आत्मकथा साहित्य का विकासात्मक अध्ययन करना ।
- लेखिकाओं की आत्मकथा का उद्भव और विकास का अध्ययन करना ।
- २००० से २०१५ तक आनेवाली आत्मकथा लेखिकाओं के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अध्ययन करना ।
- लेखिकाओं के अत्मकथा का विवेचन-विश्लेषण करना ।
- आत्मकथा में आया हुआ लेखिकाओं का जीवन संघर्ष का अध्ययन ।
- आदि उद्देश्य इस अनुसंधान के है ।

पूर्ववती शोधकार्य :

स्त्री आत्मकथा पर इस से पहले मेरे अध्ययन के अनुसार निम्नलिखित अनुसंधान इस विषय के पुरक हुए है ।

- हिन्दी का दलित आत्मकथा साहित्य - डॉ. संजय मुनेश्वर
- स्त्री आत्मकथा : आत्माभिव्यक्ति और मुक्तिप्रश्न - कूमारी ज्योती गुप्ता (काम चल रहा है ।)
- हिन्दी की महिला आत्मकथाओं का समाजशास्त्रीय अध्ययन - डॉ. दिपक नामदेव खिल्लारे
- महिला आत्मकथाओं में नारी चिंतन - डॉ. विठ्ठल शंकर नाईक

व्याप्ती एवं सिमा :

इस अनुसंधान की व्याप्ती यह है कि, लेखिकाओं की आत्मकथा २००० से २०१५ के बीच आनेवाली ही होगी । २०१५ तक ही यह अनुसंधान व्यापक होगा और इस अनुसंधान की सीमा यह रहेगी इस १०-१५ साल के बीच की आत्मकथाओं का ही अध्ययन होगा । इसके अलावा कोई अनुसंधान नहीं होगा ।

अनुसंधान की पद्धतियाँ :

इस अनुसंधान में व्याख्यात्मक और विश्लेषणात्मक पद्धतियों का प्रयोग किया जायेंगा । (१) व्याख्यात्मक पद्धति, (२) विश्लेषणात्मक पद्धति, (३) मननात्मक पद्धति, (४) आलोचनात्मक पद्धति ।

अध्याय :

इस अनुसंधान के मुख्यत: छ: अध्याय होंगे । जो निम्नलिखित है । अनुसंधान की आवश्यकता नुसार अध्याय में परिवर्तन किया जा सकता है ।

१) **प्रथम अध्याय : हिन्दी आत्मकथा साहित्य और लेखिकाओं के आत्मकथा साहित्य का विकासात्मक अध्ययन :**

इस इध्याय के अंतर्गत मुख्यत: हिन्दी आत्मकथा साहित्य का विकासात्मक अध्ययन, आत्मकथा का अर्थ एवं परिभाषा आत्मकथा का स्वरूप, आत्मकथा के तत्व, हिन्दी आत्मकथा का उद्‌भव और विकास, हिन्दी का संपूर्ण आत्मकथा साहित्य आदि बातों का अध्ययन होगा और साथ ही लेखिकाओं के आत्मकथा साहित्य का उद्‌भव और विकास, हिन्दी साहित्य में लेखिकाओं के आत्मकथा का योगदान और अंत में निष्कर्ष देकर इस अध्याय को समाप्त किया जायेंगा ।

२) **द्वितीय अध्याय : हिन्दी आत्मकथाकार लेखिकाओं का व्यक्तित्व एवं कृतित्व:**

इस इध्याय के अंतर्गत मुख्यत: इ.२००० से २०१५ तक आनेवाली हिन्दी लेखिकाओं का व्यक्तित्व एवं कृतित्व दिया जायेंगा । जिन्होंने आत्मकथा लिखकर इस युग में अपना योगदान दिया है । उसमें आनेवाली मुख्य : महिला आत्मकथाकार है-

(१) शिला झुनझुनवाला, (२) मैत्रीय पुष्पा, (३) सुनीता जैन, (४) रमनिका गुप्ता, (५) मन्नू भंडारी, (६) प्रभा खेतान, (७) चन्द्रकिरन सोनरेक्सा, (८) कृष्णा अग्निहोत्री, (९) निर्मला जैन,

उपरोक्त लेखिकाओं का जीवन परिचय एवं कृतित्व का अध्ययन किया जायेंगा ।

३) **तृतीय अध्याय : हिन्दी लेखिकाओं के आत्मकथा का विवेचन - विश्लेषण :**

इस अध्ययन के अंतर्गत हिन्दी लेखिकाओं के आत्मकथाओं का विवेचन किया जायेंगा । जिससे हर आत्मकथा का विषय, उद्देश्य का अध्ययन होगा और स्त्रीवादी दृष्टि से विवेचन इसलिये किया जायेंगा । क्योंकि स्त्री आत्मकथा साहित्य में स्त्रीवादी दृष्टि प्रचुर मात्रा में मिलती है । हर स्त्री लेखिकाओं का साहित्य लिखने का प्रथम उद्देश्य यही रहता है कि, वह अपने उपर हुए अन्याय, अत्याचार का विरोध करती है और वह बराबरी की बात कर रही है । इसलिये इसका अध्ययन जरूरी है । अंत: निष्कर्ष देकर इस अध्याय को भी समाप्त किया जायेंगा ।

४) **चतुर्थ अध्याय : हिन्दी लेखिकाओं के आत्मकथा में आया हुआ जीवन संघर्ष :**

इस चतुर्थ अध्याय के अंतर्गत आत्मकथाओं का समग्र दृष्टि से जीवन संघर्ष का अध्ययन किया जायेंगा । जिसमें मुख्य रूप से शैक्षणिक संघर्ष, पारिवारिक संघर्ष, आर्थिक संघर्ष, सामाजिक संघर्ष, धार्मिक संघर्ष, मानसिक संघर्ष आदि मुद्दों का अध्ययन किया जायेंगा । जिससे आत्मकथा में आया हुआ लेखिका का जीवन संघर्ष हमारे सामने प्रस्तुत हो । इस अध्याय के अंत में भी निष्कर्ष देकर अध्याय को समाप्त किया जायेंगा ।

५) **पंचम अध्याय : हिन्दी लेखिकाओं के आत्मकथाओं का भाषा-शैलीगत अध्ययन** :

इस पंचम अध्याय में आत्मकथा के भाषा, प्रयोग, शैली का अध्ययन किया जायेंगा । जिससे आत्मकथा में प्रयुक्त भाषीक प्रयोग, मुहावरे,

लोकोक्तियाँ, कहावतों एवं शब्दों का अध्ययन एवं विवेचन विश्लेषण इस अध्याय में होगा । भाषीकदृष्टि से अध्ययन किया जायेंगा ।

६) **षष्ठम अध्याय : उपसंहार :**

उपसंहार इस अध्याय के अंतर्गत उपरोक्त सभी अध्यायों का सार रुप में विवेचन इसमें प्रस्तुत होगा । अंत में निष्कर्ष देकर इसको भी समाप्त किया जायेंगा ।

संदर्भ सुची :

१) जमाने में हम - निर्मला जैन - राजकमल प्रकाशन दिल्ली ।

२) हादसे - रमनिका गुप्ता - राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली ।

३) कुछ कहि कुछ अनकही - शिला झुलझुनवाला - किताब घर प्रकाशन दिल्ली ।

४) और और औरत - कृष्णा अग्निहोत्री - सामायिक बुक्स, नई दिल्ली ।

५) आपहुदरी - रमनिका गुप्ता - सामयिक प्रकाशन - दिल्ली ।

६) एक कहानी यह भी - मन्नू भंडारी - राधाकृष्ण प्रकाशन - दिल्ली ।

७) पिंजरे की मैना - चन्द्रकिरन सोनरेक्सा ।

८) अन्या से अनन्या - प्रभा खेतान ।

९) कस्तुरी कुंडल बसै, गुड़ीया भीतर गुड़ीया - मैत्रीय पुष्पा ।

१०) शब्दकाया - सुनीता जैन ।

शोध निर्देशक **शोधकर्ता**

डॉ.आर.एम. जाधव **मोरे वर्षा नागोराव**

पीपल्स कॉलेज, नांदेड